## व्यास पूर्णिमा के उपलक्ष्य
## में नम्र निवेदन
## २ जुलाई, २००४

जैसे भगवान् राम का प्रकाश दिवस मनाने के लिए राम नवमी, भगवान् कृष्ण का अवतरण दिवस मनाने के लिए जन्माष्टमी, भगवान् शिव के लिए शिवरात्रि, का पुण्य पर्व मनाया जाता है, इसी प्रकार महर्षि व्यासदेव के आध्यात्मिक उपकारों को स्मरण कर, उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने का पर्व है आषाढ़ माह की पूर्णिमा– व्यास पूर्णिमा। महर्षि के श्री मुखारविन्द से निकले शब्द हैं – " सब का गुरु परमेश्वर है, वही हमारा आद्याचार्य है, सब गुरुओं का वही गुरु है, उसी जगद्गुरु के पूजन का दिन है आज"। स्वामी जी महाराज फरमाते हैं – " व्यास पूजा का पुण्य पर्व हमारे धर्म में, आध्यात्मिक सम्बन्ध स्मरण करने के लिए नियत है और इस सम्बन्ध का मूल है – श्री राम नाम"। अतः नित्य अमृतवाणी पाठ द्वारा इस राम नाम की महिमा को जानकर, उसमें अटूट विश्वास धारण करके, उसे जीवन में उतारने का संकल्प लेने का दिवस है आज। संसार में रहते हुए उस जगनियन्ता के प्रति कर्तव्य को स्मरण करने का दिन है आज – वह कर्तव्य है – उससे शाश्वत सम्बन्ध का निभाना, मोक्ष की प्राप्ति, भवरोग का अन्त, अपने सत्स्वरुप की अनुभूति तथा परमेश्वर की अनन्य-भक्ति द्वारा उसकी प्रेम व कृपा-पात्रता लाभ करना। अपने तन, मन, धन को ही नहीं, अपितु अपने अहं को भी श्री राम चरणों में

समर्पित करके साधनामय, भक्तिमय जीवन व्यतीत करने का दृढ़ निश्चय का दिन है आज। मुख्यतम समस्या का स्मरण कर उसके निदान एवं सांसारिक समस्याओं के विस्मरण का पर्व है आज। अपनी जीवन डोर प्रभु श्री राम को सौंपने का शुभ दिन है आज।

उस दयालु प्रियत्तम का आश्वासन है –

" तू मेरा बनके तो देख,
हर बन्दे को तेरा न बना दूं तो कहना।
मुझे अपना मददगार बना के तो देख,
तुम्हें सबकी गुलामी से न छुड़ा दूं तो कहना।
मेरे लिए आंसू बहा के तो देख,
संसार के लिए रोना बन्द न करवा दूं तो कहना।
तू मुझे प्यार करके तो देख,
तुझे सकल जगत का प्यारा न बना दूं तो कहना।
तू मेरे लिए तप के तो देख,
ताप से तप्त हृदय-मन को शान्त न बना दूं तो कहना।

मेरे गुरुजनों से राम नाम जपने, ध्यान में प्रतिदिन बैठने तथा सत्संग में भाग लेने का किया वायदा याद करने का दिन है आज।

आज के इस महामांगलिक दिवस पर आप सबको हार्दिक बधाई तथा सदाचारी व साधनामय जीवन के लिए मंगल कामनाएं।

सप्रेम सादर नमन।

विश्वामित्र

२.७.२००४